सामाजिक विज्ञान

(नागरिक शास्त्र)

अध्याय-9: समानता के लिए संघर्ष

SHIVOM CLASSES 8696608541

समानता के लिए संघर्ष

आपने अनेकों उदाहरण देखे हैं जिसमें लोगों के साथ समानता का व्यवहार किया गया है ऐसी स्थिति में लोग क्या कर सकते हैं हमारे पास आने को उदाहरण है जब लोगों ने असमानता के विरुद्ध और न्याय के लिए संघर्ष किया है और समानता को हासिल किया है।

भारत का संविधान हर भारतीय नागरिक को समान दृष्टि से देखता है राज्य और उसके कानून की दृष्टि में किसी भी व्यक्ति के साथ उसकी जाति, लिंग, धर्म तथा अनेक अमीर या गरीब होने के का आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जा सकता प्रत्येक व्यस्त नागरिक को मताधिकार है मताधिकार से हमारे भीतर समानता का भाव विकसित होता है क्योंकि हमारे भी वोट की कीमत उतनी ही है जितनी किसी भी और व्यक्ति के वोट की।

वित्तीय असमानता

• घरेलू कामगार को समान मताधिकार प्राप्त है। लेकिन जब अपने बच्चे को डॉक्टर के पास ले जाने की बात आती है, तो उसे सरकारी अस्पताल जाना पड़ता है, जबकि उसके नियोक्ता को निजी चिकित्सा देखभाल मिलती है। कांता और ऐसे अनगिनत लोग गरीबी का जीवन जी रहे हैं, जो प्रमुख स्थानों में घर नहीं खरीद सकते। न ही वे अपने बच्चों को किसी निजी स्कूल में भेज सकते हैं। इसलिए नागरिकों को समान मतदान का अधिकार प्राप्त हो सकता है लेकिन वित्तीय असमानता का कोहरा समाज को घेर लेता है।

• यह वित्तीय असमानता तब व्यापार और पेशेवर क्षेत्र में भी फैल जाती है। सबसे पहले तो एक गरीब छात्र देश के प्रमुख संस्थानों में शिक्षा का खर्च नहीं उठा सकता। इसलिए उसके पास अपने अमीर समकक्षों की तुलना में बहुत कम अवसर हैं। उसे मध्यम वेतन वाली नौकरी से खुश रहना पड़ता है।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

• दूसरी ओर, आपकी पुस्तक जूस विक्रेता का उदाहरण देती है जो बड़े ब्रांडों के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकता जो अच्छी तरह से विज्ञापन कर सकते हैं, हजारों लोगों को रोजगार दे सकते हैं और उन्नत तकनीक का उपयोग कर सकते हैं। गरीब जूस विक्रेता को अपने व्यवसाय के सीमित दायरे से जूझना पड़ता है।

लिंग आधारित असमानता

वित्तीय असमानताओं के अलावा, असमानता के अन्य रूप भी हैं। बॉलीवुड में, महिला अभिनेत्रियों को उनके पुरुष समकक्षों की तुलना में बहुत कम भुगतान किया जाता है। यह वेतन अंतर कई अन्य व्यवसायों में भी मौजूद है। महिला श्रमिकों को उनके पुरुष समकक्षों की तुलना में समान कार्य के लिए कम वेतन मिलता है।

केवल मजदूरी के मामले में ही नहीं, महिलाओं को पेशेवर जीवन के अन्य पहलुओं में भी असमानता का सामना करना पड़ता है। कुछ कार्यों को आम तौर पर पुरुषोन्मुखी कार्य माना जाता है, हालांकि उस धारणा के पीछे कोई तर्क नहीं है। हमने पिछले अध्याय में यह भी उल्लेख किया है कि कैसे बस ड्राइविंग, चिनाई आदि जैसे कार्यों में पुरुषों का कब्जा है।

जाति और धर्म आधारित असमानता

एक अन्य प्रकार की असमानता है जाति या धर्म आधारित भेदभाव। आपने ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी पढ़ी है, जिन्हें अपनी कक्षा में सामने बैठने की अनुमति नहीं थी, जिन्हें पूरे खेल के मैदान में झाड़ू लगाने के लिए मजबूर किया गया था, जबकि उनके सहपाठी उन्हें देखते थे। एक दलित होने के कारण उन्हें इस तरह की भेदभावपूर्ण प्रथाओं का विषय बना दिया गया। दूसरी ओर, धार्मिक भेदभाव के कारण अंसारी को मकान नहीं मिल पा रहा था।

समानता की लड़ाई

जैसा कि पहले कहा गया है, कि कोई भी ऐसे अधिकार नहीं देने जा रहा है जिसके लोग हकदार हैं। असमानता के शिकार लोगों लोगो को ही अपने अधिकार वापस लेने के लिए लड़ना पडेगा।

समानता के लिए यह संघर्ष कई तरीकों से हो सकता है। कभी-कभी, रोजा पार्क्स की तरह, एक व्यक्ति का कार्य भी समुदाय के अन्य सदस्यों को खड़े होने और समानता के संघर्ष के लिए प्रेरित कर सकता है। कभी-कभी यह समुदाय में व्यक्तियों का समूह होता है जो असमानता के पहलुओं को दूर करने का प्रयास करने के लिए सक्रिय उपाय करता है।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

भारत में असमानता का आधार

महिलाओं के द्वारा किए गए काम अक्सर ही पुरुषों के काम की तुलना में तुच्छ माने जाते हैं भारत में किए जाने वाले भेदभाव का प्राथमिक कारण यह है कि वह किसी खास सामाजिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के हैं धर्म, जाति और लिंग के आधार पर भेदभाव किया जाता है।

दुनियाभर के तमाम समुदायों गांवों और शहरों में आप देखते होंगे कि कुछ लोग असमानता के लिए संघर्ष के कारण सम्मान से पहचाने जाते हैं यह लोग असमानता के विरुद्ध संघर्ष करते हैं और इन्हें समाज का समर्थन प्राप्त होता है भारत में ऐसे अनेक संघर्ष याद किए जा सकते हैं जहां पर लोग ऐसे मुद्दों के लिए लड़ने को आगे आए जो उन्हें महत्वपूर्ण लगते थे जैसे महिलाओं का आंदोलन मध्यप्रदेश का तवा मत्स्य संघ इसके महत्वपूर्ण उदाहरण है।

समानता के लिए संघर्ष

पूरी दुनिया में लोगों ने समानता और न्याय के लिए लड़ने के प्रयास किए हैं। रोजा पार्क्स, नेल्सन मंडेला, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर उन कई लोगों में से हैं जिन्होंने समानता के लिए लड़ाई लड़ी। भारत में कई संगठन समानता के लिए संघर्ष करते रहे हैं। मध्य प्रदेश में तवा मत्स्य संघ एक ऐसा संगठन है जो बड़े पैमाने पर परियोजनाओं के कारण अपने घरों से विस्थापित हुए लोगों के लिए संघर्ष कर रहा है।

- किसी वन क्षेत्र में एक बड़े बांध के निर्माण से न केवल उस क्षेत्र के जंगलों का विनाश होता है बल्कि वहां रहने वाले कई लोग अपने घरों से विस्थापित भी हो जाते हैं।
- ये विस्थापित लोग ज्यादातर गरीब हैं और वे अपने घरों के पुनर्निर्माण के लिए संघर्ष करते हैं। चॉल और बस्तियां, जहां वे रहते हैं, अक्सर उखड़ जाती हैं। घर से विस्थापित होने के बाद पढ़ाई पूरी करने के लिए संघर्ष करने वाले बच्चों को सबसे ज्यादा परेशानी होती है।
- यह हमारे देश में एक आम समस्या बन गई है। अपने न्याय के लिए लड़ने के लिए ऐसे विस्थापित समुदायों के समर्थन में कई लोग एक साथ आए हैं।
- ऐसा ही एक संगठन तवा मत्स्य संघ (टीएमएस) है। इसका निर्माण तब हुआ था जब तवा नदी पर तवा बांध बनाया गया था। तवा नदी मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा जिले की महादेव पहाड़ियों से निकलती है। नदी होशंगाबाद में नर्मदा नदी में मिलती है।
- बांध के निर्माण से वन भूमि का विशाल भाग जलमग्न हो गया। वनवासी विस्थापित होने के बाद विभिन्न स्थानों पर चले गए। उनमें से कुछ बांध के पास बस गए और जमीन के

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

छोटे-छोटे टुकड़ों पर खेती करने के अलावा मछलियां भी पकड़ीं। हालांकि उनकी कमाई बहुत कम थी।

• 1994 में सरकार ने निजी ठेकेदारों को तवा जलाशय में मछली पकड़ने का अधिकार दिया। इन ठेकेदारों ने बाहर से सस्ते मजदूरों को किराए पर लिया और आसपास के गांवों के लोगों को क्षेत्र छोड़ने के लिए मजबूर किया।

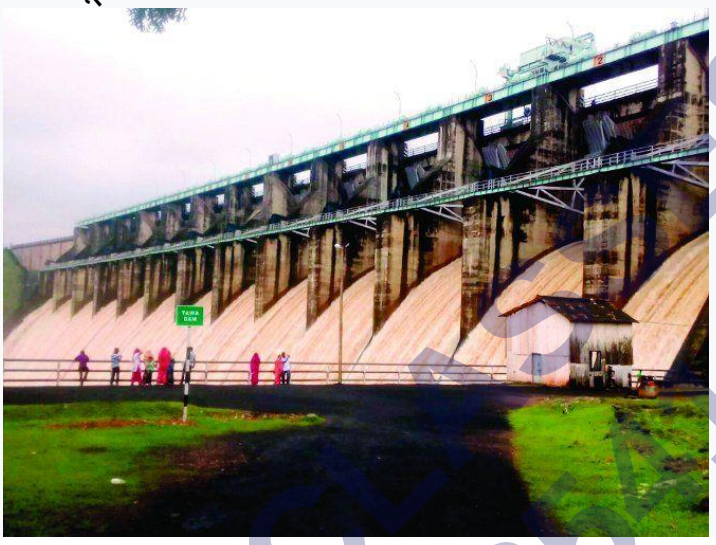

तवा बांध के निर्माण ने वनवासियों के बड़े समुदायों को विस्थापित किया

• अपने हितों की रक्षा के लिए, गांव के लोगों ने एक संगठन, तवा मत्स्य संघ का गठन किया, जिसने रैलियों का आयोजन किया और तवा बांध में मछली के अपने अधिकार की मांग करते हुए सड़कों को अवरुद्ध कर दिया।

• इन विरोधों के बाद, सरकार ने स्थिति का आकलन करने के लिए एक समिति बनाई। समिति ने सिफारिश की कि ग्रामीणों को जलाशय में मछली पकड़ने की अनुमति दी जानी चाहिए। नतीजतन, सरकार ने स्थानीय लोगों को मछली पकड़ने का अधिकार दिया। इसके लिए पांच साल के लीज एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर किए गए।

• मछली श्रमिकों की आय में काफी वृद्धि हुई क्योंकि टीएमएस ने एक सहकारी संस्था भी स्थापित की जो श्रमिकों से उचित मूल्य पर मछलियां खरीदती थी।

• टीएमएस ने मछुआरों को मछली पकड़ने के जाल की खरीद और मरम्मत के लिए ऋण भी दिया। इस प्रकार टीएमएस ने मछुआरों को आत्मनिर्भर बनाया।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

1996 में मध्य प्रदेश सरकार

ने तय किया कि तवा बांध के जलाशय से मछली पकड़ने का अधिकारी यहां के विस्थापित लोगों को ही दिया जाएगा इस प्रकार सरकार ने 2 महीने बाद ही मत्स्य संघ को बांध में मछली पकड़ने का के लिए 5 वर्ष का पट्टा देना स्वीकार किया।

तवा मत्स्य संघ के साथ जुड़कर मछुआरों ने लगातार अपनी आय में इजाफा दर्ज किया यह इसलिए संभव हुआ कि उन्होंने एक सहकारी समिति बनाई जो पकड़ी गई मछलियों की प्रत्येक खेत की उचित कीमत सीधे उन्हें देती है।

भारत का संविधान एक जीता हुआ दस्तावेज

भारत का संविधान हम सभी को समान मानता है देश के सभी नागरिक को समानता का अधिकार है और भारत में जितने भी समानता के लिए आंदोलन चलाए गए उनका आधार संविधान रहा है।

लोकतंत्र में कई व्यक्ति और समुदाय लगातार इस दिशा में कोशिश करते हैं कि लोकतंत्र का दायरा बढ़ता जाए और अधिक से अधिक मामलों में समानता लाने की जरूरत को स्वीकार किया जाए

समानता का मूल्य लोकतंत्र के केंद्र में है । परंतु कुछ मुद्दे लोकतंत्र के इस मूल भाव के लिए चुनौती पैदा कर रहे हैं जैसे

1. देश की स्वास्थ्य सेवाओं का निजी करण
2. संचार के माध्यमों पर व्यवसायिक घरानों का बढ़ता दबाव और नियंत्रण
3. महिलाओ के श्रम को कम मूल्य देना
4. किसानों की कम आय

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 104)

प्रश्न 1 'मताधिकार की ताकत' से आप क्या समझते है ? इस पर आपस में विचार कीजिए।

उत्तर – भारत का संविधान हर भारतीय नागरिक को समान दृष्टि से देखता है और देश के हर वयस्क नागरिक को चुनावों के दौरान समान रूप से मतदान करने का अधिकार है। भारत के संविधान में भारत के सभी नागरिकों को जो 18 वर्ष या उससे अधिक उम्र के हैं, उन्हें एक गुप्त मत देने का अधिकार है। मताधिकार की ताकत के ज़रिए ही जनता अपने प्रतिनिधियों को चुनती या बदलती है। मताधिकार से हमारे भीतर समानता का भाव विकसित होता है। क्योंकि हमारे वोट की कीमत उतनी ही है। जितनी किसी भी और व्यक्ति के वोट की। लेकिन यह भाव, अधिकत्तर लोगों के जीवन को नहीं छू पाता है।

प्रश्न 2 क्या आप अपने परिवार, समुदाय, गांव, शहर में किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सोच सकते है जिनका आप इसलिए सम्मान करते है क्योंकि उन्होंने न्याय और समानता के लिए लड़ाई लड़ी ?

उत्तर – दुनिया भर के तमाम समुदायों, गाँवों और शहरों में आप देखते होंगे कि कुछ लोग समानता के लिए किए गए संघर्षों के कारण सम्मान से पहचाने जाते हैं। ये वे लोग हैं, जो अपने साथ या अपने सामने किए जा रहे किसी भेदभाव के विरुद्ध उठ खड़े हुए। हम इनका सम्मान इसलिए भी करते हैं कि इन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को उसकी मानवीय गरिमा के साथ स्वीकार किया और सदैव इसे धर्म और समुदाय के ऊपर माना, इन्हें लोग बहुत विश्वास के साथ अपनी समस्याओं के समाधान के लिए बुलाते हैं। अकसर समानता के किसी विशेष मुद्दे को लेकर संघर्ष करने वाले व्यक्ति समाज में एक महत्त्वपूर्ण पहचान बना लेते हैं। क्योंकि समता की लड़ाई में बड़ी संख्या में लोग उनके साथ हो जाते हैं। भारत में ऐसे अनेक संघर्ष याद किए जा सकते हैं। जहाँ पर लोग ऐसे मुद्दों के लिए लड़ने को आगे आए , जो उन्हें महत्त्वपूर्ण लगते थे। हमारे समुदाय में भी मनमोहन नाम के एक व्यक्ति ने संघर्ष किया था क्योंकि जहाँ वे रहते थे, वहां कुछ औरतें जो छोटी जाति की थी उन्हें नलके से पानी भरने नहीं दिया जाता था और साथ में दुकान से राशन लेने में भी समस्या आती

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

थी। इसलिए उन्होंने कई ऐसे आंदोलन और साथ में लोगों को जागरूक करने का और ये सब खत्म करने के लिए संघर्ष किया और आखिर में उन्हें सफलता भी प्राप्त हुई।

प्रश्न 3 'तवा मत्स्य संघ' के संघर्ष का मुद्दा क्या था ?

उत्तर – 'तवा मत्स्य संघ' के संघर्ष के मुद्दे में सभी लोग अपने अधिकार के लिए एक साथ खड़े हुए थे। 1994 में सरकार ने तवा बाँध के क्षेत्र में मछली पकड़ने का काम निजी ठेकेदारों को सौंप दिया। इन ठेकेदारों ने स्थानीय लोगों को काम से अलग कर दिया और बाहरी क्षेत्र से सस्ते श्रमिकों को ले आए। 'तवा मत्स्य संघ' ने सरकार से मांग की कि लोगों के जीवन निर्वाह के लिए बाँध में मछलियाँ पकड़ने के काम को जारी रखने की अनुमति दी जाए।

प्रश्न 4 गांव वालों ने यह संघठन बनाने की जरूरत क्यों महसूस की ?

उत्तर – 1994 में सरकार ने तवा बांध के क्षेत्र में मछली पकड़ने का काम निजी ठेकदारों को सौंप दिया था। इन ठेकेदारों ने स्थानीय लोगों को काम से अलग कर दिया और बाहरी क्षेत्रों से सस्ते श्रमिकों को ले आए। इसके बाद भी ठेकेदारों ने गुंडे बुलाकर गांव वालों को धमकियाँ देना भी आरंभ कर दिया, क्योंकि लोग वहाँ से हटने को तैयार नहीं थे। गाँव वालों ने एकजुट होकर तय किया कि अपने अधिकारों की रक्षा के लिए लड़ने और संगठन बनाकर सामने खड़े होने का वक्त आ गया है। इस तरह ' तवा मत्स्य संघ ' नाम के संगठन को बनाने की जरूरत महसूस हुई।

प्रश्न 5 क्या आप सोचते है कि 'तवा मत्स्य संघ' की सफलता का कारण था, ग्रामीणों की बढ़ी संख्या में भागीदारी ? इस सम्बन्ध में दो पंक्तियां लिखें।

उत्तर – लोगों और समुदायों का विस्थापन हमारे देश में एक बड़ी समस्या का रूप ले चुका है। जहाँ सभी लोग संगठित होकर इन ठेकेदारों के विरुद्ध लड़ाई के लिए सामने आए। गांव वालो ने एकजुट होकर तय किया कि अपने अधिकारों की रक्षा के लिए लड़ने और संगठन बनाकर सामने खड़े होने का वक्त आ गया। अपना हक़ पाने के लिए उन्होंने 'चक्का जाम' शुरू किया। उनके प्रतिरोध को देखकर सरकार ने पूरे मामले की समीक्षा के लिए एक समिति गठित की। समिति ने गाँव के जीवनयापन के लिए उनको मछली पकड़ने का अधिकार देने की अनुशंसा की। 1996 में मध्य प्रदेश सरकार ने तय किया कि तवा वाँध के जलाशय से मछली पकड़ने का अधिकार यहाँ के

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

विस्थापितों को ही दिया जाएगा। दो महीने बाद सरकार ने तवा मत्स्य संघ को बाँध मछली पकड़ने के लिए पाँच वर्ष का पट्टा (लीज) देना स्वीकार कर लिया। और इस तरह इनको सफलता मिली।

प्रश्न 6 क्या आप अपने जीवन से एक ऐसा उदाहरण याद कर सकते है, जिसमें एक व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों ने मिलकर असमानता की किसी स्थिति को बदला हों।

उत्तर – कुछ लोग असमानता के विरुद्ध आंदोलनों में हिस्सा ले रहे होते हैं, तो कुछ और लोग असमानता के विरुद्ध अपनी कलम अपनी आवाज़ या अन्य कलाओं, जैसे – नात्य, संगीत आदि का प्रयोग ध्यान आकृष्ट करने के लिए करते हैं। हमारे समुदाय में कई लोगों ने मिलकर बिजली और पानी की समस्या के विरुद्ध आंदोलन लड़ा और असमानता की जो लोगों की मानसिक स्थिति थी, उसे पूर्ण रूप से बदला।

प्रश्न 7 उपर्युक्त गीत में आपको कौनसी पंक्ति प्रिय लगी ?

उत्तर – उपर्युक्त गीत 'जानने का ह्क' में मुझे सबसे प्रिय पंक्ति मेरे पैरो को ये जानने हक रे, क्यूँ गाँव – गाँव चलना पड़े है, क्यूँ बस का निशान नहीं। जहाँ लोग बोलते है कि मेरे पाँवों को जानने का हक है कि क्यों हमें इतनी दूर हर गांव में पैदल जाना पड़ता है, हमें बस के होने का कहीं छोटा सा निशान भी नहीं दिखता।

प्रश्न 8 'मेरी भूख को जानने का हक़ रे' इस पंक्ति में कवि का आश्य क्या हो सकता है?

उत्तर – कवि के इस पंक्ति का आश्य यह है कि मेरी भूख आप सबसे यह जानना चाहती है कि बड़े बड़े लोगों के गोदाम में तो दाने सड़ रहे है अर्थात गेंहू, बाज़रा इत्यादि लेकिन हमें उसमें से एक मुट्ठी दाना भी नहीं मिलता।

प्रश्न 9 क्या आप अपनी भाषा में अपने क्षेत्र में प्रचलित कोई ऐसा गीत या कविता सुना सकते है, जिसमें मनुष्य की समता और गरिमा का वर्णन मिलता हो ?

उत्तर – मानव जीवन की गरिमा को, पहचान सको तो पहचानो।

यह जीवन है अनमोल बड़ा, चाहे मानो या न मानो |

इस जीवन को पाकर के भी, कर पाये अच्छे काम नहीं।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

खेला – खाया, सोया जीभर, कर पाये प्रभु का काम नहीं।

प्रश्न 10 समानता के लिए लोगों के संघर्ष में हमारे सविधान की क्या भूमिका हो सकती है ?

उत्तर – भारत का संविधान हम सभी को समान मानता है, देश में समत्ता के लिए चलने वाले आदोलन और संघर्ष अकसर संविधान के आधार पर ही समता और न्याय की बात करते हैं। तवा मत्स्य संघ के मछुआरों को आशा का आधार भी संविधान का प्रावधान ही हैं । लोकतंत्र में कई व्यक्ति और समुदाय लगातार इस दिशा में कोशिश करते हैं कि लोकतंत्र का दायरा बढ़ता जाए और अधिक से अधिक मामलों में समानता लाने की जरूरत को स्वीकार किया जाए । समता का मूल्य लोकतंत्र के केंद्र में है। लोकतंत्र के लिए चुनौतियों में वे मुद्दे हैं जो सीधे गरीबों को प्रभावित करते हैं और समाज में उपक्षित समुदायों से जुड़े हुए हैं । ये देश में सामाजिक और आर्थिक समानता से जुड़े मुद्दे हैं । लोकतंत्र के लिए समता और उसके लिए संघर्ष एक महत्त्वपूर्ण समानता के लिए तत्त्व है । व्यक्ति और समुदाय का स्वाभिमान और गरिमा तभी बनी हमारे संविधान की रह सकती है जब उसके पास अपनी और परिवार की सभी जरूरतें सकती पूरी करने के लिए पर्याप्त संसाधन हों, और उनके साथ कोई भेदभाव न हो।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)